इकाई 13 संरचना और प्रकार्य*

संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 प्रत्यक्षवाद से प्रकार्यवाद

13.3 प्रकार्यवाद के आधार

13.4 सामाजिक मानव विज्ञान में प्रकार्यवाद रैडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की

13.5 टॉलकॉट पार्सन्स और रॉबर्ट के मर्टन का प्रकार्यवाद

13.6 सारांश

13.7 संदर्भ

13.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होंगे :

- प्रकार्यवाद के आधार की व्याख्या कर सकेंगे;
- समाज को समझने के लिए प्रकार्य की संकल्पना के महत्व की चर्चा कर सकेंगे; तथा
- रेडक्लिफ ब्राउन, मैलिनॉस्की और पार्सन्स के सदैधांतिक उपागम की तुलना; व्यतिरेक कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

प्रकार्यवाद सामजिक मानव-विज्ञान और समाजशास्त्र में एक उपागम का नाम है, जिसके अनुसार समाज अंतर संबंधित हिस्सों का पूरा हिस्सा है, जहाँ प्रत्येक हिस्सा पूरे हिस्से की रख रखाव में योगदान देता है। समाजशास्त्र का लक्ष्य समाज के प्रत्येक हिस्से के योगदान का पता लगाना है और किस प्रकार पूरे हिस्से की क्रमिक व्यवस्था को साथ लेकर कार्य करता है। वहीं पर 'प्रकार्य' के कई अर्थ और कई प्रयोग हैं, लेवी, जूनियर, (1968: 22) लिखते हैः संभवतः प्रकार्य के सामान्य संकल्पना के साथ मुख्य समस्या है यह है कि एक ही शब्द का कई भिन्न संदर्भो में प्रयोग होता है।'

एक भिन्न उपागम के रूप में, समाज को देखने और विश्लेषित करने के तरीके के रूप में, प्रकार्यवाद बीसबीं शताब्दी के प्रारंभ में सर्वप्रथम सामाजिक मानव-विज्ञान में उभरा, और बाद में 1930 के शुरुआत में, समाजशास्त्र में उभरा। फिर भी, इसका मूल अनुरूपता की तरह उतना ही पुराना है, जितना कि प्राचीनकाल में प्लेटो (ई.पू. 428/7-345/7) और अरस्तू (384-322 ई.पू.) मूलभूत सादृश्य की जड़े हैं। कुछ लेखक क्लाउड हेनरी द सेंत-सिमन की अठारहवीं शताब्दी के प्रारंम्भिक और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ को 'समाज शास्त्र का जनक' मानते हैं जो कि फ्रेंच क्रांति के बाद लेखन कार्य करते हैं। क्योंकि उनके लेखन में दो विचारों का सह-अस्तिव मिलता है– पहला जिससे कि समाज का वैज्ञानिक अध्ययन उभरता है और दूसरे से पर्याप्त मात्रा में मार्क्सवादी सिद्धांत का योगदान प्राप्त होता है (गिडेन्स, 1973)। पहला विचार यह है कि समाज के अध्ययन के लिए 'वैज्ञानिक पद्धति' का प्रयोग किया जाना चाहिए। और दूसरा विचार यह है कि प्रत्येक समाज में अपने अंत

*प्रो. (से.नि) विनय कुमार श्रीवास्तव, दि.वि

विरोध का अंकुर होता है, जिसके कारण यह समय के साथ बदलता रहता है। सेंट साइमन आंदोलन को परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानते है।

समाज को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का यह पहला विचार है जिसे ऑगस्ट कॉम्ट (1789-1857), सेंतु साइमन के सहयोगी ने दिया और वे वह व्यक्ति हैं जिन्होने 'सोशियोलॉजी' शब्द को निर्मित किया। यह शब्द पूर्ण रूप से 'प्रत्यक्षवाद' या सकारात्मक दर्शन में विकसित हुआ। इस मत के अनुसार, समाज के अध्ययन की पद्धति प्राकृतिक और जीव विज्ञान से आयी। इस अध्ययन का उद्देश्य विकास के नियम' और समाज के कार्य पद्धर्म' की खोज करना या अर्थात् किस प्रकार समय के साथ समाज विकसित हुआ और उसके भिन्न स्तर क्या थे जिससे यह गुजरा और एक विशिष्ट काल में समाज किस प्रकार कार्य करता है।'

इस इकाई में हम समाजशास्त्रीय लेखन में प्रकार्य की संकल्पना का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

13.2 प्रत्यक्षवाद से प्रकार्यवाद

समाज शास्त्र में प्रकार्यवाद के तात्कालिक अग्रदूत ऐमाईल दुर्खाइम (1858-1917) हैं, जो कि कॉम्ट के कटु आलोचक हैं और उनसे प्रभावित भी हैं, दुर्खाइम समाजशास्त्र के विषय परिभाषित करने के लिए प्रखरता के साथ रूचि रखते हैं जो कि दर्शन और जीव विज्ञान से बिल्कुल अलग है। उनके लिए, समाज शास्त्र सामाजिक तथा तुलनात्मक और वस्तुपरक अध्ययन है, जो कि सोचने और कार्य करने और अनुभव करने का तरीका है' जिसमे कि बाहर मौजूद-व्यक्ति चेतना' के 'विचारणीय गुण' है। सामाजिक तथ्य व्यक्ति में नही अपितु, समूह 'सामूहिक मन' उत्पन्न होते हैं। वे उसी तरह से अध्ययन किए जाते है जिस प्रकार से भौतिक वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है क्योंकि वे व्यक्ति के दायरे के बाहर अस्तिव में होते है, सामाजिक तथ्य 'वस्तु' हैं, वस्तुनिष्ठ ढंग से व्यक्ति के दायरे के बाहर महसूस किए जाते है। फिर भी इसका यह मतलब नहीं कि वे उसी तरह वास्तविक है जिस प्रकार की 'भौतिक वस्तुएं'। इसके बजाय, उनके अध्ययन के लिए किसी को उसी मनोदशा का प्रयोग करना पड़ता है जो कि प्राकृतिक और जैविक वस्तुओं के अध्ययन में किया जाता है जिसमें कि प्राकृतिक और जीव-वैज्ञानिक विषय-वस्तु शमिल होते हैं। दुर्खाइम की पुस्तक 'रूल्स ऑफ बायोलॉजिक मेथड (1893)' मुख्य रूप से इन्हीं समास्याओ से संबाधित है।

समाजशास्त्रीय विवरण

सामाजिक तथ्य के अध्ययन से, समाजशास्त्री प्रस्तुत करते हैं जिसे कि दुर्खीम 'सामजिक विवरण' कहते है। प्रत्येक समाजशास्त्रीय विवरण में दो हिस्से होते हैः यहाँ दुर्खाइम (1893:123) को उद्घृत करते हुए : '.....सामाजिक घटना की व्याख्या हेतु प्रभावी मामला जो इसे उत्पन्न करता है और कार्य जो यह पूर्ण करता है उसका अलग से अन्वेषण किया जाना चाहिए,' समाजशास्त्रीय विवरण का पहला घटक 'ऐतिहासिक निमित्र विवरण' है : उन कारणों को अंकित करना जो ऐतिहासिक स्त्रोतो का परीक्षण करके दृश्य उत्पन्न करते हैं न कि लिप्त हो कर जिसे रेडक्लिफ ब्राउन' अनुमानिक इतिहास' कहते हैं'। दूसरा घटक 'प्रकार्यात्मक है, अर्थात-एक घटक समाज को जो योगदान करता है 'सामान्य सद्भावना स्थापित करने में ।' दुर्खाइम (1895:125)

दुर्खीम के द्वारा प्रतिपादित प्रकार्य की परिभाषा ने आश्चर्य जनक रूप से उनके बाद के समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान दोनों में प्रकार्यवादियों के लेखन को प्रभावित किया, उनके अनुसार, प्रकार्य एक 'योगदान' है जो एक घटक पूरे समाज के 'रखरखाव और भलाई' हेतु करता है इसलिए, प्रकार्य एक 'सकारात्मक योगदान हैः यह समाज की अच्छाई

में अतंनिहित है (पूर्ण रूप से), जिसके लिए यह निरंतरता सातत्य और स्वस्थ रखरखाव सुनिश्चित करता है।

उदाहरण के तौर पर अपने शोध कार्य में, जो कि श्रम-विभाजन पर था, दुर्खीम (1893) डार्विन के उत्तरजीर्वता के विचार को नकारते हैं। इसके बजाय प्रतियोगिता संघर्ष और बहिष्कार के सिद्धांत को समर्थन प्रदान करते है।, दुर्खीम यह दर्शाते है कि जैसे-जैसे मानव जनसंख्या में वृद्धि होती है समाज अधिक से अधिक श्रम-विभाजन में नौकरियों के विशेषीकरण की ओर अग्रसर होकर बँट जाती है। दूसरों के साथ उत्तरजीविका के लिए संघर्ष करने के बजाय मनुष्य एक दूसरे पर निर्भर होने लगता है। विशेषीकरण हर एक को समाज में महत्वपूर्ण बना देता है।

दुर्खीम उपयोगितावादियों (अर्थात-आर्थिक) और व्यक्तिवादियों (अर्थात मनोवैज्ञानिक) की व्याख्या के भी आलोचक हैं, क्योंकि उनके अनुसार उनमें से कोई श्रम-विभाजन के वास्तविक प्रकार्य की सही व्याख्या नहीं करता। उनके अनुसार, श्रम विभाजन का प्रकार्य समाज अमलीय है। यह सामाजिक एकता में योगदान करता है। आधुनिक औद्योगिक समाज एकजुट है क्योंकि नौकरियों के विशेषीकरण के द्वारा एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ती है। आस्ट्रोलियाई-टोटमवाद के अपने अध्ययन में, वे दर्शाते हैं कि धर्म का प्रकार्य समाज में एकता उत्पन्न करना है, लोगों को नैतिक समुदाय में बाँधना चर्च कहलाता है' (दुर्खीम, 1915)।

दुर्खीम विशेष रूप से यह दर्शाने में रूचि रखते हैं कि सामाजिक तथ्यों का कार्य नैतिक है। सामाजिक संस्थाएँ एकता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए काम करती हैं।

इस दृष्टि से, वे ऐसी घटनाओं को गिनाने में सफल रहे है, जिनमें से कई, समाज के लिए 'अस्वास्थ्यकर' साबित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, वे अपराध को 'सामान्य' और 'स्वस्थ' लक्षण सभी समाजों के लिए मानते हैं, क्योकि यह सामूहिक भावना को सुदृढ़ करती है और नैतिकता और कानून के विकास की दिशा में कार्य करती है। अपराध का समान्य दर यह संकेत करता है कि समाज व्यक्ति के उन्हें 'व्यक्तियों' के रूप में अभिव्यक्त करने सभी 'विचलन' को 'दबाने' के पूरे अधिकार के अभाव में रहता है जब अपराध सामान्य दर से अधिक हो जाता है तब यह अस्वस्थ (या रोगात्मक) बन जाता है, समाज के सामान्य कार्य को जोखिम में डालता है। जैसा कि स्पष्ट है, कि दुर्खीम सामाजिक तथ्यों के 'सामान्य है 'रोगात्मक' को अलग मानते हैं। समाज में जो सामान्य है वह ठीक है और जो नहीं है वह रोगात्मक है। पहला समाज को जोड़ने का कार्य करता है, जबकि दूसरा एकीकरण की प्रक्रिया को विफल करता है।

13.3 प्रकार्यवाद के आधार

दुर्खीम 'प्रकार्यवादी' नहीं है जिस अर्थ में यह शब्द प्रयोग हुआ है जिस उपागम के लिए ब्रितानी समाज मनाव विज्ञानी, ए.आर. रेडालिक ब्राउन (1881-1955) ने इसका प्रयोग किया है और बॉनीस्लाव मैलिनॉस्की (1884-1942) ने जिस प्रकार इसका समर्थन किया है। दुर्खीम 'प्रकार्यवाद' शब्द का प्रयोग नहीं करते, हॉलाकि वे सामाजिक प्रकार्य की संकल्पना को परिभाषित करते हैं। कोई दुर्खीम के कार्य के सही सह-अस्तिव ऐतिहासिक (आनुवंशिक, विकासवादी और ऐतिहासिक) और सयकालिक (समाज यहॉ और अब) उपागम से अवगत हो सकता है। उदाहरण के लिए, अपने धर्म के प्रमुख अध्ययन मे, वह आस्ट्रोलियाई टोटमवाद के विचार से शुरू करते है, जो धार्मिक जीवन की सबसे प्रांरभिक रूप है, इसके उद्‌गम के अनुमान की बजाय वह टोटमवाद के प्रकार्य से ज्यादा संबध रखते है और किस

प्रकार इसका अध्ययन जाटिल समाजों में धर्म के स्थान को समझने में मदद कर सकता है। समकालिक (या वर्तमान) समाजों के अध्ययन पर जोर ने परवर्ती विद्वानों पर जबरदस्त प्रभाव डाला।

बीसवीं शताब्दी की शुरूआत ने प्रकार्यवाद के उदय और विकासवादी सिद्धांत के लोप को देखा। एडन कुपर (1973) मानते हैं कि प्रकार्यवाद के लिए वर्ष 1922 आश्चर्य का साल (एनस मिराविलिस) था। इसी वर्ष दो प्रबन्ध प्रकाशित हुए जिसने कार्यात्मक उपयोग को प्रभावित किया। पहला रेडक्लिफ-ब्राउन द्वारा अडमान आइलैंडर्स और दूसरा, मेलिनॉस्की द्वारा पश्चिमी प्रशांत के अर्गोनॉट्स था। मानव विज्ञानी प्रकार्यवाद का प्रभाव अन्य विषयों विशेषतया समाजशास्त्र पर भी अनुभव किया गया, टेल्कोट पार्सन्स जैसे समाजशास्त्री कार्यवादी मानव विज्ञानिय के लेखन से प्रभावित थे। इसके परिणामस्वरूप प्रकार्यवाद एक महत्वपूर्ण उपागम के रूप में उभरा, इसका प्रभाव 1960 दशक के अंत और 1970 दशक के प्रारंभ तक रहा। इसके 150 वर्षो के इतिहास में, पहला कॉम्ट के प्रत्यक्षवाद में, उसके बाद दुर्खीम के 'समाजक्षेत्रीय प्रत्यक्षवाद' में, और फिर बीसवीं शताब्दी के प्रकार्यवादियों के कार्य में, प्रकार्यवाद कई तथ्य और रूपांतर समाहित करके आया है। कई प्रकार्यवादियों के मध्य तर्क संगत अंतर पाया जाता है – वास्तव में, उनमें से कुछ मुख्य प्रतिद्वंदी हैं, जैसे कि रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की। उनके मध्य मतभेद होने के वावजूद, ऐसा लगता है कि सभी प्रकार्यवादियां के कार्य में निम्न पॉच प्रतिज्ञप्तियॉ एक समान हैं।

1) समाज (या संस्कृति) अन्य पद्धतियों की तरह एक पद्धति है, जैसे कि सौर-मंडल, या जैव मंडल।

2) एक पद्धति के रूप में, समाज (या संस्कृति) के कई भाग है, (जैसे, संस्था, समूह, भूमिका, संध, संगठन), जो कि परस्पर संबद्ध, परस्पर निर्भर और अंत संबंधित है।

3) प्रत्येक भाग अपना कार्य करता है – यह पूरे समाज (या संस्कृति) को अथवा योगदान देता है – और यह अन्य भागों के साथ भी संबंध बनाकर कार्य करता है।

4) एक भाग में परिवर्तन दूसरे भाग में भी परिवर्तन लाता है, या कम से कम दूसरे भाग और के कार्य को प्रभावित करता है, क्योंकि सभी भाग एक दूसरे से नजदीकी संबंध बनाकर जुड़े रहते है।

5) पूरा समाज या संस्कृति – जिसके लिए हम 'पूर्ण/संपूर्ण' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं यह सभी हितों के योग से बड़ा होता है। यह किसी भाग से कम नहीं हो सकता, या कोई भाग संपूर्ण को व्याख्या नहीं कर सकता। एक समाज (या संस्कृति) की अपनी पहचान होती है, अपनी 'चेतना' होती है, या दुर्खीम के शब्दों में, 'सामूहिक चेतना' होती है।

13.4 सामाजिक मानव विज्ञान में प्रकार्यवादः रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की

दोनों ब्रितानी प्रकार्यवादी दृष्टिकोण के संस्थापक (रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की) उन्नीसवीं शताब्दी के विकासवाद के प्रखर विरोधी थे। रेडक्लिफ ब्राउन (1952) ने कहा कि यह 'आनुमानिक इतिहास' पर आधारित था, एक शब्द जिसे हमने पहले प्रयोग किया, और न कि प्रमाणिक इतिहास। यह छद्म ऐतिहासिक' था, इसलिए वैज्ञानिक मूल्य से अलग था। मैलिनॉस्की के लिए विकासवाद 'अनुमानिक पुनर्निमाण का कारागार था। इन विद्वानों के

कार्य से एक बदलाव आया :

1) बिना क्षेत्र कार्य मानव विज्ञान से क्षेत्र कार्य आधारित अध्ययन पर जोर,

2) समाज के विकास के स्तरों और समाज के उद्‌विकास के अध्ययन से संस्थाओं (ऐतिहासिक अध्ययन) के अध्ययन, से समाज यहाँ और अब (समकालिक अध्ययन) की ओर।

3) पूरे समाज और संस्कृति (दीर्घ उपागम) के अध्ययन से विशिष्ट समाज के अध्ययन की ओर, विशेष रूप से छोटे स्तर के समाज (सूक्ष्य उपागम), और

4) सैद्धान्तिक स्तर तक सीमित समाज की समझ यहॉ और अब के सामाजिक ज्ञान को रखकर व्यावहारिक प्रयोग की ओर बढना, समाज में इच्छित परिवर्तन लाने के लिए। यह माना गया कि अर्जित ज्ञान समाज में लोगों की स्थिति सुधारने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। मैलिनॉस्की ने मानव-विज्ञान के इस संबंध को 'व्यावहारिक मानव विज्ञान' कहा।

प्रकार्यवादी अपनी आलोचना को विकास और प्रसार की प्रक्रिया के विरूद्व नहीं लगाया, जिसके लिए वे जानते थे कि ये परिवर्तन की महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ है। वास्तव में, रेडक्लिफ-ब्राउन और मैलिनॉस्की सोचते थे कि संभवतः वे इन प्रक्रियाओं के अध्ययन को करेंगे। वे जिसके विरूद्व थे वह था 'आनुमानिक इतिहास' के माध्यम से अतीत का अध्ययन बल्कि वे आनुमनिक अध्ययन में विश्वास करते थे। यदि प्रमाणित दस्तावेज समाज के बारे में उपलब्ध हो वे बदलाव में कुछ अंतदृष्टि हेतु उपयोग में लाए जा सकते है। किन्तु प्रकार्यवादियों ने यह पाया कि 'प्राक् और पूर्व-शिक्षित' समाजों के बारे में दस्तावेज उपलब्ध नहीं थे।

क) रेडक्लिफ ब्राउन कर संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम

रेडक्लिफ-ब्राउन (1952:180) प्रत्येक समाज को 'प्रकार्यात्मक अंत संबंधित पद्धति' के रूप में परिभाषित करते हैं जिसमें कि 'सामान्य नियम या कार्य संचालित होते है वह स्वीकार करते हैं कि दुर्खीम ने पहला व्यवस्थित प्रकार्य संकल्पना को निरूपित किया और यह संकल्पना 'सामाजिक और जैविक जीवन के मध्य सादृश्य' पर आधारित है। फिर भी, रेडक्लिफ ब्राउन ने संदेह व्यक्त किया कि प्रकार्यवाद जैसा कि दुर्खीम ने प्रयोग किया है वह उद्‌देश्य परक हो सकता है। इसलिए वे 'आवश्यकता' शब्द के लिए इस्तेमाल करते हैं जो कि 'अस्तित्व की आवश्यक स्थिति' है। वह मानते है कि अस्तित्व के लिए जिस स्थिति का प्रश्न आवश्यक है वह अनुभावात्मक है, और समाज का अध्ययन इसके बारे में सूचित करेगा। रेडक्लिफ ब्राउन ' विभिन्न पद्धतियों के अन्तर्गत के लिए आवश्यक स्थिति की विविधता' को पहचानते है। एक बार जब हमने इसे पहचान लिया, हम यह कहने से बच जाएंगे कि संस्कृति के प्रत्येक विषय का एक प्रकार्य होना चाहिए और कि 'विभिन्न संस्कृतियों के विषयों का एक ही प्रकार्य होना चाहिए' (टर्नर 1987:48)।

रेडक्लिफ ब्राउन 'प्रकार्यवाद' शब्द को पंसद नहीं करते, जिसे कि मैलिनॉस्की ने उत्साह के साथ प्रसारित किया। उदाहरण के लिए, एक संस्थान समाप्त हो जाता है, किन्तु समाज समय के साथ अस्तित्व में बना रहता है, हॉलाकि यह बदल सकता है और रूपांतरित भी हो सकता है। एक संस्थान का अध्ययन हो सकता है यहाँ तक कि जब इसके हिस्से काम करना बंद कर दें। दूसरे शब्दों में, एक संस्थान की संरचना का अध्ययन उसके प्रकार्य से हटकर किया जा सकता है, जो कि समाज के साथ ऐसा नहीं है। सामाजिक संरचना को तभी देखा जा सकता जब यह काम करता है। संरचना और प्रकार्य समाज-मानव विज्ञान में अलग न किये जाने वाली संकल्पनाएं है। इसलिए रेडक्लिफ ब्राउन अपने उपागम को

'संरचनात्मक प्रकार्यात्मक' कहते है, न कि 'प्रकार्यत्मक' जैसा कि कईयों ने किया है। वह लिखते है। (1952 : 180)

प्रकार्य की संकल्पना में संरचना की संकल्पना शामिल रहती है जिसमें संबंधों के समुच्चय इकाई तत्वों के बीच भी शामिल रहती है, सरंचना का सातत्य जीवन की प्रक्रिया से सुरक्षित रहती है जो इकाई अंगों से बनी होती है।

रेडक्लिफ ब्राउन के संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम में निम्न धारणाएँ शामिल रहती हैः

1) समाज के अस्तित्व के लिए आवश्यक स्थिति बनाए रखना इसके हिस्सों का न्यूनतम एकीकरण है।

2) प्रकार्य की संकल्पना उन प्रक्रियाओं की ओर संकेत करती है जो आवश्यकता एकीकरण या एकता को बनाए रखती है।

3) और, प्रत्येक समाज में, संरचनात्मक लाभ आवश्यक एकता के बचाए रखते के योगदान को प्रदर्शित कर सकती है।

दुर्खीम के लिए, एकता मुख्य (केंद्रीय) संकल्पना है, जबकि रेडक्लिफ ब्राउन के लिए यह समाज का 'संरचना सातत्य' है। उदाहरण के लिए, वंश परंपरा के विश्लेषण में, रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार, सर्वप्रथम किसी को यह मान लेना चाहिए कि एकता का कुछ न्यूनतम स्तर इसके सातत्य में अवश्य बने रहना चाहिए। तब वंश परंपरा से जुड़ी प्रक्रियाओं का परीक्षण किया जाना चाहिए, उनके द्वारा सामाजिक एकता को बनाए रखने के परिजामों के मूल्यांकन हेतु। तब, कोई समाज के दूसरी परंपराओं की ओर मुड़ेगा, उनके अंगों के योगदान का प्रत्येक स्तर पर विश्लेषण पूर्व संरचनात्मक सातत्य को बनाए रखेगा।

रेडक्लिफ ब्राउन अपने कथन के हठधर्मी होने से काफी दूर हैं। उनके लिए, सामाजिक व्यवस्था की प्रकार्यात्मक एकता (या एकीकरण) एक परिकल्पना है कि हम समाज की एकता और संरचनात्मक सातत्य को देखते हैं जिसका यह मतलब नहीं कि यह बदलता नहीं, रेडक्लिफ ब्राउन यह मानते है कि सामाजिक स्वास्थ्य की अवस्था (यूनोमिया) और सामाजिक बीमारी (डिसनोमिया) सातत्य के दो सीमाओं को शामिल करते है, और वास्तविक समाज इन दोनों के मध्य कहीं पड़ा रहता है।

मैलिनॉस्की का प्रकार्यवाद

रेडक्लिफ ब्राउन से तुलना करने पर, यह मैलिनॉस्की हैं के अलग 'विचारधारा' के निर्माण का दावा करते हैं, 'प्रकार्यात्मक स्कूल'। मैलिनॉस्की (1926:132-3) मानते हैं कि प्रत्येक सभ्यता में प्रत्येक प्रथा, भौतिक वस्तु, विचार और विश्वास कुछ महत्वपूर्ण प्रकार्य की पूर्ति करता हैं, तथा इसे कुछ कार्यों की भी पूर्ति करनी होती है और यह कार्यरत पूर्ण के भीतर अपरिहार्य होता है।

जबकि रेडक्लिफ ब्राउन समाज और इसके अस्तित्व के आवश्यक स्थिति (अर्थात् एकीकरण) से शुरू करते हैं, मैलिनॉस्की का प्रारंम्भिक बिंदु व्यक्ति है, जिसकें पास मूल (या जैविक) आावश्यकताओं का समुच्चय होता है। जिसे उसके अस्तित्व के लिए पूरा किया जाना चाहिए। यह इस महत्व के कारण है कि मैलिनॉस्की व्यक्ति को प्रदान करते हैं वह शब्द है 'मनोवैज्ञानिक प्रकार्यवाद' जो व्यक्ति के जिए संरक्षित हैं, रेडक्लिफ ब्राउन के उपागम की तुलना में जिसे 'सभाचर भारतीय प्रकार्यवाद' कहा जाता है क्योंकि इसमें समाज एक मुक्त संकल्पना है।

मैलिनॉस्की का उपागम तीन स्तरों के मध्य तुलना करता है, जैविक सामाजिक संरचनात्मक और सांकेतिक (टर्नर 1987: 50-1)। इन प्रत्येक स्तरों की आवश्यकतों की एक प्रवृत्ति है जो कि व्यक्ति को जीवित बचे रहने के लिए उसकी पूर्ति करना जरूरी है। यह उसकी

उत्तर जीविता है कि बड़े अस्तित्व को उत्तर जीविता (जैसे कि समूह, समुदाय, समाज) उस पर निर्भर रहती है। मैलिनॉस्की प्रस्तावित करते हैं कि इन तीनों स्तरों में एक अधिक्रम है। इसके नीचले स्तर पर जैविक व्यवस्था रखी गई हैं, उसके बाद सामाजिक संरचनात्मक व्यवस्था है और अंत में, सांकेतिक व्यवस्था है। जिस तरह एक स्तर पर आवश्यकताओं की पूर्ति होती है वह दूसरे स्तर के आवश्यकताओं की पूर्ति में भी वैसा ही प्रभाव डालती है।

सबसे मूल आवश्यकता जैविक है, किंतु यह किसी प्रकार के अपचयवाद की और संकेत नहीं करती, क्योंकि प्रत्येक स्तर में इसके भिन्न गुण और आवश्यकताएँ शमिल होती हैं और कई स्तरों के अंतसंबंधों से संस्कृति की एक एकीकृण पूर्णता उजागर होती हैं। संस्कृति मैलिनॉस्की के उपागम का मुख्य बिंदु है। यह अनोखा मानवीय है, जिसके लिए यह उप मानवीयता के अस्तित्व में नही पाई जाती। इन सभी चीजों को मिलाकर भौतिक और अभौतिक जिसे कि मनुष्य ने बनाया है जबसे वे अपने वानर पूर्वज़ों से अलग हुए हैं। संस्कृति वह उपकरण जिससे कि मनुष्य अपनी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह आवश्यक सेवा और आवश्यक पूर्ति की व्यवस्था है। इस भूमिका की वजह से संस्कृति मनुष्य की जैविक आवश्यक पूर्ति करता है जिसके कारण मैलिनॉस्की का प्रकार्यवाद 'जैस सांस्कृतिक प्रकार्यवाद' कहलाता है।

रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की के बीच एक और अंतर पर विचार किया जा सकता है। मैलिनॉस्की की मौलिक संकल्पना संस्कृति की संकल्पना है - घटना मात्र है। (गौड़ और प्रासंगिक) रेडक्लिफ ब्राउन के लिए। वह मानते हैं कि सामाजिक संरचना का अध्ययन (जो कि उनके अनुसार प्रेक्षयीय तत्व है) संस्कृति के अध्ययन को भी समाहित कर लेती हैं, इसलिए, संस्कृति के अध्ययन के लिए अलग अनुशासन की जरूरत नहीं है। अभी जबकि सामाजिक संरचना व्यक्तित्व लोगो को होती हैं, संस्कृति लोगों के मन में होती हैं, अवलोकन के अधीन नही होती है उसी तरह नहीं होती जैसे कि सामाजिक संरचना होती है। रेडक्लिफ ब्राउन सामाजिक मानव विज्ञानिकों प्राकृति के विज्ञान को एक शक्ति बनाना चाहते हैं, जो तभी संभव होगा जब आनुभविक अन्वेषण की विषय सामवती होगी।

मैलिनॉस्की के उपागम का आधार 'महत्वपूर्ण अनुक्रम सिद्वांत हैं, जिसका कि जैविक आधार है और वह सभी समाजों में समाविष्ट की जाती है। मे अनुक्रम ग्यारह तक होता हैं, हर एक में एक मनोवेग को बनाए रखता हैं, एक दैहिक क्रिया से जुड़ी होती हैं, और एक संतोष जो उस क्रिया के परिणाम से प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, निद्राकुता का मनोवेब सोने के कार्य को साथ लिए रहती हैं, 'बची हुई ऊर्जा के जागृति के संतोष में परियत होती है। (मैलिनॉस्की 1944:77, बनदि 2000:68)। मैलिनॉस्की ग्यारह प्रदत के रूपावली को सात जैविक आवश्यकताओं और उनके सांस्कृतिक प्रत्युत्तर के समुह के साथ मानते हैं (देखें तालिका 6.2)।

मूल आवश्यकता	संस्कृति प्रत्युत्तर
1. मेटावॉलिज़्म	सहानुभूति
2. उत्पत्ति	नातेदारी
3. शरारिक आराम	आप्रय
4. ब्चाव	सभवाभ
5. गतिविधि	क्रियाकलाप
6. विकास	प्रक्षिशक
7. स्वास्थ्य	स्वास्थ्य विज्ञान

उदाहरण के लिए, पहली आवश्यकता भोजन है, और सांस्कृतिक तंत्र भोजन प्राप्त करने की प्रक्रिया पर केंद्रित हैं, जिसके लिए मैलिनॉस्की सहानुभूति शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जिसका तात्पर्य होता है कि भोजन को भेजना। उसी तरह, दूसरी आवश्यकता उत्पत्ति (समाज का जैविक सातत्य) की है और जिसका सांस्कृतिक प्रत्युत्तर नाते दारी है जो विवाह और यौन संबंध से संबंधित है। इससे, मैलिनॉस्की चार परत अनुक्रम में जाते हैं, जिसे वे उपकरणात्मक आदेश कहते हैं, और सभी को उसके सांस्कृतिक प्रत्युत्तर से जोड़ते है। चार परत वाला अनुक्रम है अर्थ, सामाजिक नियंत्रण, शिक्षा और राजनीतिक संगठन। यहाँ से, वे सांस्कृतिक व्यवस्था की ओर बढ़ते हैं – धर्म, जादू, विश्वास और मूल्य संस्कृति में इसकी भूमिका का वे परिक्षेय करते हैं।

13.5 टॉलकोट पार्सन्स (1902-1975) और रॉबर्ट मर्टन (1910-2003 का प्रकार्यवाद

सन् 1975 में, एक महत्वपूर्ण लेस में, पार्सन्स अपने विद्याथी रॉबर्ट मर्टन और स्वंय को प्रखर प्रकार्यवादी करार देते हैं। उनके अनुसार, संरचना जीवित व्यवस्था के अंगों के मध्य संबंधों के किसी समूह को कहते हैं। अनुभविक आधार पर, वे कहते हैं, इसका अनुमान लगाया जा सकता है, या दिलाया जा सकता है कि ये संबंध कुछ काल तक स्थिर रहते हैं। प्रक्रिया संरचना से सहसवादी संकल्पना हैं, कोई परिवर्तन कहता है जो व्यवस्था की अवस्था में होता है या कि इसके प्राभाविक हिस्सों में होता हैं। संरचना के साथ, मुख्य संकल्पना स्थिरता की है, और प्रक्रिया के साथ, यह परिवर्तन की है। इसलिए, संरचना से, सामाजिक व्यवस्था के संबंधों के प्रतिमान का ध्यान दिलाता है, और प्रक्रिया उस व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाता है, संरचना मात्सक प्रकार्यवाद का महत्वपूर्ण अभिलोकन रहा है कि इसने प्रक्रिया की अपेक्षा संरचना पर जोर दिया है।

पार्सन्स मानते हैं कि उनका मूल प्रतिपादन संरचनात्मक प्रकार्यवाद, शीर्षक से है समाज का विश्लेषण उसे स्थिर होने की प्रवृत्ति से करते हैं, किंतु नया प्रतिपादन, संरचनात्मक प्रकार्यवाद, शीर्षक से है समाज का विश्लेष उसे स्थिर होने की प्रवृत्ति से करते हैं, किंतु नया प्रतिपादन/जहाँ प्रकार्य की संकल्पना पर ज्यादा जोर है अपेक्षाकृत संरचना के, जो परिवर्तन और विकास को ज्यादा महत्व देता है। उदाहरण के तौर पर कोई अमेरिकी संदर्भ में इसका परिक्षेप कर सकता है।, स्थिर संरचना जैसे कि परिवार में महिलाओं की शिक्षा की प्रक्रिया का प्रकार्य (पार्सन्सः 1951)।

पार्सन्स का प्रकार्यवाद, प्रकार्यात्मक आदेश के शब्दों में अधिक जाना जाता है। व्यवस्था के अस्तित्व को बनाए रखने की आवश्यकता स्थिति की जरूरत पड़ती है। इसे अंग्रेजी भाषा में AGIL मॉडल के नाम से भी जाना जाता है (पहले चार अक्षरों के प्रकार्य पर आधारित जिसका पार्सन्स ने खोज किया है) या 'चार-प्रकार्य रूपावली' यह पार्सन्स के सहयोगी कार्य रॉबर्ट एफ. बेल्स के साथ लघु समूहों में नेतृत्व के प्रयोग से विकसित हुआ (रॉकर : 1974)।

सभी कर्म सिद्दांत और समान उनमें से एक हैं - चार प्रमुख समस्याओं का सामना करें (जो चार प्रमुख आवश्यकताएँ हैं), अर्थात् अनुकूलन (A), लक्ष्य प्राप्ति (G), एकीकरण (I), और आदर्श अनुपालन या जैसा कि पार्सन्स ने दूसरा नाम दिया, अंतनिर्हित (अव्यक्त) आदर्श अनुपालन या समान रूप से, अव्यक्तता (L)। पार्सन्स समाज (या सामाजिक व्यवस्था) को एक बड़े वर्ग के रूप में देखते हैं, जिसे वे चार बराबर भागों में बाँटते हैं। रेखाकित विचार यह है कि सभी व्यवस्थाओं को इन चार प्रकार्यों को जीवित रहने के लिए आवश्यक रूप से पूरा करना चाहिए। इन चार प्रकार्यात्मक आदेशों के अर्थ इस प्रकार हैं।

1) अनुकूलनः इसका तात्पर्य समाज से काफी मात्रा में संसाघनों को जुटाने की समस्या से है और उन्हें पूरी व्यवस्था में बाँटने से है। प्रत्येक समाज को कुछ संस्थाओं की जरूरत होती है। जो व्यवस्था में अनुकूलन का प्रकार्य करते हैं जो कि एक बाह्य प्रकार्य है। अनुकूलन साधान प्रदान करता हैं - उपर्कात्यक पक्ष - लक्ष्य की प्राप्ति के लिए है। जैविक तत्व कार्य के सामान्य व्यवस्था में अनुकूलन का कार्य करते हैं। समाज के संदर्भ में, आर्थिक संस्था यह प्रकार्य करती हैं।

2) लक्ष्य प्राप्ति : यह प्रकार्य संसाधन जुटाने के लक्ष्य प्राप्ति की आवश्यक व्यवस्था से संबंधित है और पूरी व्यवस्था में उसे बाँटने से है। यह कार्य करने वालों की अभिप्रेरणा को लामबंध (संघटित) करती है। कार्य की समान्य व्यवस्था में, व्यक्तित्व इस प्रकार्य को करता है, जबकि समाज के मामले में यह कार्य राजनीतिक संस्थाओं का दिया जाता हैं, क्योंकि सत्ता निर्णय लेने और उसे अमल में लाने के लिए आवश्यक होती हैं। लक्ष्य प्राप्ति ध्येय से संबंधित हैं - उपभोगात्मक पक्ष। चूँकि लक्ष्य बाह्य वातावरण के संबंध से चित्रित की जाती हैं, यह अनुकूलन की तरह हैं, एक बाह्य प्रकार्य।

3) एकीकरणः यह पार्सन्स के चार प्रकार्य रूपावली का ह्रदय माना जाता है (वैलेस ए. ड वोफ 1980:36)। एकीकरण का अर्थ विभिन्न कर्त्ताओं (या, व्यवस्थाओं इकाई जैसे कि संस्थाएँ) के मध्य संबंध नियंत्रित करना, समायोजन और संयोजन की आवश्यकता। जिससे कि व्यवस्था एक चलायमान तत्व बना रहे। क्रिया के सामान सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार्य को निभाती है, जबकि समाज में, वैधानिक संस्थाएँ और न्यायालय इस कार्य को करते हैं। एकीकरण ध्येय या साहस से संबंधित हैं, और व्यवस्था के आंतरिक पक्ष से भी संबंधित हैं।

4) अव्यक्तता (आदर्श अनुपालन और तनाव प्रबंधन) : इस प्रकार्य में व्यवस्था को ज्ञान और सूचना प्रदान करना शामिल होता है। क्रिया के सामान्य सिद्धांतों में, संस्कृति ज्ञान और सूचना का संग्रह - इस प्रकार्य का निष्पादन करते हैं। संस्कृति कार्य नहीं कर सकती क्योंकि इसके पास ऊर्जा नहीं होती। यह छिपी होती हैं, कर्त्ताओं को उपलब्ध (जो कि ऊर्जा से भरे होते हैं) करातीं है ज्ञान और सूचना जिसकी आवश्यकता क्रिया को पूरा करने के लिए होती हैं। क्योंकि संस्कृति पीछे अस्तित्व में होती हैं लोगों को कार्य पूर्ण करने के लिए, इसे अव्यक्त कहते हैं। एकीकरण दो चीज़ों पर ध्यान देती हैं, पहला यह कर्त्ता को प्रेरित करती है व्यवस्था में अपनी भूमिका निभाने हेतु और आदर्श मूल्यों को बनाए रखने हेतु, और दूसरा, कर्त्ताओं के विभिन्न अंगों के बीच आंतरिक तनाव प्रबंधन की यात्रिकता प्रदान करना। प्रत्येक समाज जिस समस्या का सामना करती हैं वह है उसकी मूल्य व्यवस्था को अक्षुण बनाए रखना और यह सुनिश्चित करे कि वे मूल्य अच्छी तरह संप्रेषित किए जाएँ और उसे आत्यसात कर पाएँ। संस्थाएँ इसे आगे बढ़ाती है वे परिवार, धर्म और शिक्षा। अव्यक्तता ध्येय प्राप्ति का साधन प्रदान करती हैं, यह व्यवस्था का आंतरिक हिस्सा हैं।

AGIL मॉडल

साधन (उपकरणात्मक)	ध्येय (उपभोगात्मक)
बाह्य अनुकूलन A	लक्ष्यप्राप्ति G
आतंरिक अव्यक्तता (आर्दश अनुपालन और तनाव मुक्त प्रबंधन) यात्रिकता	एकीकरण I

कर्म सिद्धांत का	सामान्य स्तर
तत्व	व्यक्तित्व
संस्कृति	समाजिक व्यवस्था

समाजिक व्यवस्था में AGIL प्रकार्य

अर्थ	राजनीति
न्यालीय व्यवस्था	सामाजिक समुदाय

विश्लेषण के उद्देश्य के लिए, पार्सन्स AGILके अनुरूप उप-व्यवस्था की पहचान करते हैं सभी व्यवस्थाओं में और उनके उप व्यवस्थाओं में भी (देखें चित्र)। जैसे कि हमने देखा हैं, कर्म सिद्धांत के सामान्य स्तर पर जैविक तत्व अनुकूलन का प्रकार्य करता है, व्यक्तित्व व्यवस्था, लक्ष्य प्राप्ति का प्रकार्य, सामाजिक व्यवस्था कई इकाइयों को जोड़ती हैं, और सांस्कृतिक व्यवस्था आदर्श अनुपालन से संबंधित है। तब सामाजिक व्यवस्था चार AGIL प्रकार्यों में बाँटा गया है। हमने पहले ध्यान दिया कि अर्थ अनुकूलन का प्रकार्य करता हैं, जबकि, राजनीतिक (राजनीतिक संस्था), लक्ष्य प्राप्ति का प्रकार्य है। उप-व्यवस्था के लिए जो एकीकरण का प्रकार्य करती हैं, पार्सन्स 'सामाजिक समुदाय' शब्द का प्रयोग करते हैं, जो कि कठिनाई होती होती है के जेमिनशाफ्ट (समुदाय) के विचार को याद दिलाता है। 'सामाजिक समुदाय' भाईचारा, एकता, सम्बद्धता और प्रतिमान के प्रतिनिष्ठाा, मूल और संस्थाओं को उत्पन्न करती है। आदर्श अनुपालन का प्रकार्य, पार्सन कहते हैं, न्यासीय व्यवस्था के लक्ष्य नाम देते हैं।

जो न्यास की प्रकृति को शामिल किए रहती है या न्यासित समाहित किए रहती है। यह व्यवस्था नैतिक मूल्य, विश्वास ओर अभिव्यक्ति संकेतों को उत्पन्न करती है और उसे वैधता प्रदान करती है।

व्यवस्था को प्रत्येक उप-व्यवस्था को व्यवस्था मानक विश्लेषक के लिए लिया जा सकता है और फिर उसके अंगों को चार हिस्सों में तोड़कर जो कि क्रमशः अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकृत और अव्यक्तता का कार्य निभाता है। समाज के इस प्रकार के विशलेषण को व्यवस्थित उपागम कहते हैं।

13.6 सारांश

पार्सन्स का एजीआईएल मॉडल एक आदर्श प्रकार है सामान्य समाजों की अपेक्षा निर्देशित समाजों में उपयुक्त है यह प्रचलित रूप से महान सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है सभी एकीकृत सम्मिलित सिद्धान्त – जिसमें माना जाता है कि विस्तृत विवरण शक्ति है पार्सन्स का यह विद्यार्थी रॉबर्ट मर्टन ऐसे सिद्धातों से संदेह वादी है जिनके लिए यह अति सामान्य है ज्यादा प्रयोग होने हेतु मर्टन 1957। इसके स्थान पर वह अपनी पसंद मध्य स्तर में अभिव्यक्त करते है जो कुछ सीमित प्रश्नों में समाहित घटनाओं (जैसे- कि समूह, सामाजिक गतिशीलताा या भूमिका संघर्ष) को प्रतिपादित करता है। आंशिक रूप से, इस मध्य-स्तर योजना की वजह से, मर्टन का प्रकायवाद पार्सन्स से अलग है। उदाहरण के लिए, मर्टन किसी प्रतिकात्मक पूर्व-आवश्यकता की खोज का त्याग करते हैं जो सभी सामाजिक व्यवस्थाओं में वैद्य होगा। वे पहले के प्रकार्यवाद विचार को अस्वीकार करते हैं कि पुनरावर्ती सामाजिक घटनाएं पूरे समाज के लाभ के संदर्भ में व्यवस्थित होनी चाहिए। आलोचना के

लिए, मर्टन पूर्वी के प्रकार्यता- दिपों के तीन मान्यताओं की पहचान करते हैं जो नीचे दिए गए हैं–

1) समाज के प्रकार्यात्मक इकाई की अवधारणा। यह एक अनुमान है कि समाज में एकता है, जो पेचिदा की वजह से अलग करता है जो पूर्व में एक अशं बनाता है।

2) सार्वभौमिक प्रकार्यवाद की अवधारणा। यह एक अनुमान है कि सभी समाजों या सांस्कृतिक रूपों में ससकारात्मक प्रकार्य है। जो समाज की भलाई और उसके अनुपालन के लिए है।

3) अपरिहार्यता की अवधारणा। यह एक अनुमान है कि प्रकार्य के एक समान या सांस्कृतिक रूप से निर्वाह करता है वह समाज के जीवित रहने की अपरिहार्य पूवस्थिति है। मर्टन मानते हैं कि ये अवधारणाएं अनुभाविक रूप से प्राथमिक नहीं है उदाहरण के लिए, यह मान लेने का कोई कारण नहीं हैं कि विशिष्ट संस्थाएं एकमात्र हैं जो प्रकार्यों की पूर्ति करें। आन्दभविक शोध यह दर्शाता है कि कई स्तर हो सकते हैं किसे मर्टन प्रकार्यात्मक-विकल्प कहते हैं? वे उसी प्रकार्य को निभाने में सक्षम हो सकते हैं।

तार्किक दृष्टि से मर्टन यह प्रयास करने की कोशिश करते हैं जिसे कि वे समाजशास्त्र में प्रकार्यात्मक विश्लेषण का वर्गीकरण कहते हैं। एक प्रकार्यात्म्क रूपावली। हेतु जो कि महान सिरुद्धान्त नहीं है। के सामाजिक यथार्थ के वास्तविक दिशाओं पर विचार करता है। विचलन और अनुरूपता, उनका विवेचन ओर समझ प्रस्तुत करता है। अन्य प्रकार्यवादियों की तरह, वे समाज को, व्यवस्था का अंतरर्निछित अंग मानते हैं, जहां एक अंग का प्रकार्य दूसरे अंग पर प्रभाव चलता और वही व्यवस्था पर भी प्रभाव डालता है। अपने पूर्ववर्तियों की तरह वे एकीकृत और समय की संकल्पना में रूचि रखते हैं। और समाज के बने रहने के लिए प्रथाओं और संस्थाओं के योगदान में भी रूचि रखते हें। उनके प्रकार्य की परिभाषा पूर्व के अंश का सकारात्मक योगदान के रूप में है : प्रकार्य वे योगदान या परिभाषा है जो किसी प्रदत्त व्यवस्था के अनुकूलन या समायोजन के लिए बनते हैं।''

ऊपर अन्य प्रर्कावादियों से कुछ बिंदुओं पर सहमत होकर मर्टन दो वर्गीकरण के समूह से अलग योगदान करते हैं, जैसे कि, प्रकार्य और अप्रकार्य'' मानते हैं कि सभी योगदान आंतरिक रूप से समाज के लिए अच्छे या ''प्रकार्यत्मक'' है। एक प्रतिष्ठित। जिसे स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करते हैं। वे मानते हैं कि ऐसे कार्य है जिनमें कि परिणाम है व्यवस्था के अनुकुलन या समायोजन को कम करने की'। ऐसे कार्य नुकसान पहुंचाने वाले कारक बन जाते हैं, जिसके लिए परिभाशिक शब्द 'अप्रकार्य' है। इसलिए यह अपेक्षा की जाती है कि समाजशास्त्री हमेशा निम्न प्रश्नों को पूछेंगे – ''किस लिए परिभाषा प्रकार्यत्य या अप्रकार्यात्मक है वहीं संस्था एक संदर्भ में प्रकार्यात्मक और दूसरे संदर्भ में अप्रकार्यात्मक हो सकती है। सभी सामाजिक संस्थाएं कुछ प्रकार्या और अप्रकार्य की अपेक्षा रखती है। बहरहाल संस्था एक सापत्य में परिणामों के बीच पूर्व संतुलन पर निर्भर करता है।

मर्टन दो द्विभाजन (प्रकार्य और अप्रकार्य, व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य के रूप में चार प्रकार के विवरण को आगे बढ़ाते हैं। पूर्व के प्रकार्यवादी सिर्फ एक विवरए को आगे रखते हैं ओर वह भी अव्यक्त प्रकार्य के संदर्भ में। मर्टन की संकल्पित योजना अनुभाविक शोध की ओर निर्देश करती है, अपेक्षाकृत उस सिद्धान्त के साथ रहना जिसके कि कई कथित दावे हों, जैसे कि पार्सन्स का महान सिद्धान्त'।

बॉक्स 2 : व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य

व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य के बीच अंतर का मूल समाज शासक के संस्थापक के लेखन में भी है। धर्म को अपने अध्ययन में, उदाहरण के तौर पर, दुखिया (1915) अंतर करते हैं ' लोग वह कार्य करते है जिससे वे जागरूक रहते हैं' और जो उनके सामूहिक कार्य से उभरता है जो वे नहीं करना चाहते थे या जिसका अनुमान नहीं था।' जब लोग सामूहिक टोटलवादी प्रथा के लिए एकजुट होते हैं, उनका विशिष्ट लक्ष्य उनके टोटल का सम्मान होता है, किंतु जो ये टोटल उत्पन्न करते हैं वह है हमराजन की शक्ति जो कि गैर-इरादतन बिना पहचाने ओर अनुमानिक परिव्यय होता है। इसको मानकर, कोई भी कह सकता है कि व्यक्ति प्रकार्य वे प्र्याप्त है जो न तो पहचाने जा सकते हैं न ही उसका विचार करते हैं।

बोध प्रश्न

1) रेडक्लिफ ब्राउन के संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम, वर्ण संकल्पना क्या है?

2) रेडक्लिफ ब्राउन और (मैलिनॉस्की के सैधांतिक उपागमों के मध्य प्रमुख अंतर क्या है?

3) पार्सन्स के एजीआईएल मॉडल का परीक्षण करें।

13.7 संदर्भ

बर्नार्ड, एलन (200) हिस्टरी एंड थ्योरी इन सेंथ्रोलॉजी कैम्ब्रिज यूनिवसिटी प्रैस।

डेविस, किंग्स्ले (1959), द मिथ ऑफ फंक्शनल एनॉलिसिस ऐसए स्पेशल मैथड इन सोशियोजॉजी एंड ऐंथ्रोलॉजी अमेरिकन सोशियोलॉजीकल रिव्यू, 24:757-72.

दुर्खाइम, एमिल (1893) द डिविजन ऑफ लेबर इन सोसायटी ग्लेकाः द

दुर्खाइम, एमिल (1895) द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथ्ड, न्यूयॉर्क

दुर्खाइम, एमिल (1915) द एलिमेंटरी फार्म्स ऑफ रिलीजियस लाईफ, लंदन, एलन ए.ड अनवीन,

गिडेन्स, एंथोनी (1973) डक्लास स्ट्रक्चर्स ऑफ द एडवांस्ड सोसाइटीक, लंदन हंचिंसन

गाउल्डनर, एर्लवन डत्ल्यू (1973) फॉर सोशियोलॉजी लंदनः एलनलेन

गाउल्डनर, एर्लवन डब्ल्यू (1973) ऐंथ्रोपोलॉजिस्ट्स एंड ऐथ्रोपोलॉजीः द यॉडर्न ब्रिटिश स्कूल, लंदनः रूतलेज

लेवी, जू. मार्मयन जे. (1968) फेक्षनल एनॉलिसिस : स्ट्रक्चरल फंक्शनल एनॉलिसिस. इंटरनेशनल एनसाईकलोपीडिया ऑफ सोशलसाइंसेसः मैकमिलन कम्पनी एंड फ्री प्रैस।

मैलिनॉस्की, ब्रोनिस्लेव (1922) अर्गोनिट्स ऑफ दी वेस्टर्न पेसिफिक, लंदन : जॉर्ज रूतलेज संस.

मैलिनॉस्की, ब्रोनिस्लेव (1926) ऐथ्रोपोलॉजी. इनसाइक्लो बिटेनिकल : फर्स्ट सटली मेंटरी वोल्यूम.

मैलिनॉस्की, ब्रोनिस्लेव (1949) ए सांइटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर एंड अदर एसेज. चैपलोहिल : यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ -कैरोलिना प्रैस।

मर्टन, रॉबर्ट. के (1957) सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर, (रिवाइज्ड एनलार्ज्ड एडिशन). न्यू यॉर्क : द फ्री प्रैस।

पार्सन्स, टेलकॉट (1951) द सोशल सिस्टम. न्यू यॉर्क : द फ्री प्रैस।

पार्सन्स, टेलकॉट (1975) द प्रजेंट स्टेटस ऑफ स्ट्रक्चरल फंक्शनल थीयरी इन सोशियोलॉजी. इन लेविस ए. कैंसर (सं.), द आइडिया ऑफ सोशलट्रचर : पेपर्स इन ऑनर ऑफ रॉवर्ट के मर्टन. , न्यू यॉर्क : हरकोर्ट ब्रास जोवानोविच।

पार्सन्स, टैलकाट एंड जेरॉहड एम. प्लॉट. (1973), द अमेरिकन यूनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज : हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

रेडक्लिफ ब्राडन, ए.आर. (1922) दी अंडमान आईलैंडस. कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी-प्रैस।

रेडक्लिफ ब्राडन, ए.आर. (1952) स्ट्रचर ए.ड फंक्शन इन प्रीमिटिव सोसायटीः एंथेस एंड एडेसेज, लंदन : कोहेन वेस्ट।

रोचर, गे (1974) टैलकॉट पार्सन्स एंड अमेरिकन सोशियोलॉजी, लंदन नेलसन

टर्नर जोनॉथन एच़ (1987) द स्ट्रक्चर ऑफ सोशियोलॉजिकल क्यिरी, जयपुर : रावत पब्लिकेशन।

बैलेस, रूथ ए. एंड एलिसन वॉल्फ (1980) कंटेम्पोरेरी सोशियोलोजिकल थीयरी। एंगलवुड क्लिपन्स, एन.ज. : प्रोंसि. हाल.